समलैंगिक हार्वे मिल्क की कहानी

कारी क्राको
चित्र: डेविड गार्डनर

जनवरी में एक बरसात वाले दिन, सैन फ्रांसिस्को के सिटी हॉल की सीढ़ियों पर, हार्वे मिल्क ने पद की शपथ ली. वो संयुक्त राज्य अमेरिका में खुले तौर पर किसी भी निर्वाचित शहर के पहले समलैंगिक अधिकारी बने थे. हार्वे मिल्क ने नया इतिहास रचा था

उस दिन इतिहास रचते हुए, मिन्नी मिल्क के बुद्धिमान, ऊर्जावान और साहसी बेटे ने दुनिया को दिखाया कि ऐसा कभी नहीं हुआ. अपने स्वयं के डर पर काबू पाकर, आप दूसरों को भी खुद पर गर्व करने का साहस दे सकते हैं.

हार्वे की विरासत आज संयुक्त राज्य कांग्रेस सहित सरकार के हर स्तर पर मौजूद है. वहां आज खुले तौर पर सैकड़ों समलैंगिक निर्वाचित अधिकारी मौजूद हैं.

समलैंगिक

हार्वे मिल्क

की कहानी

कारी क्राको

चित्र: डेविड गार्डनर
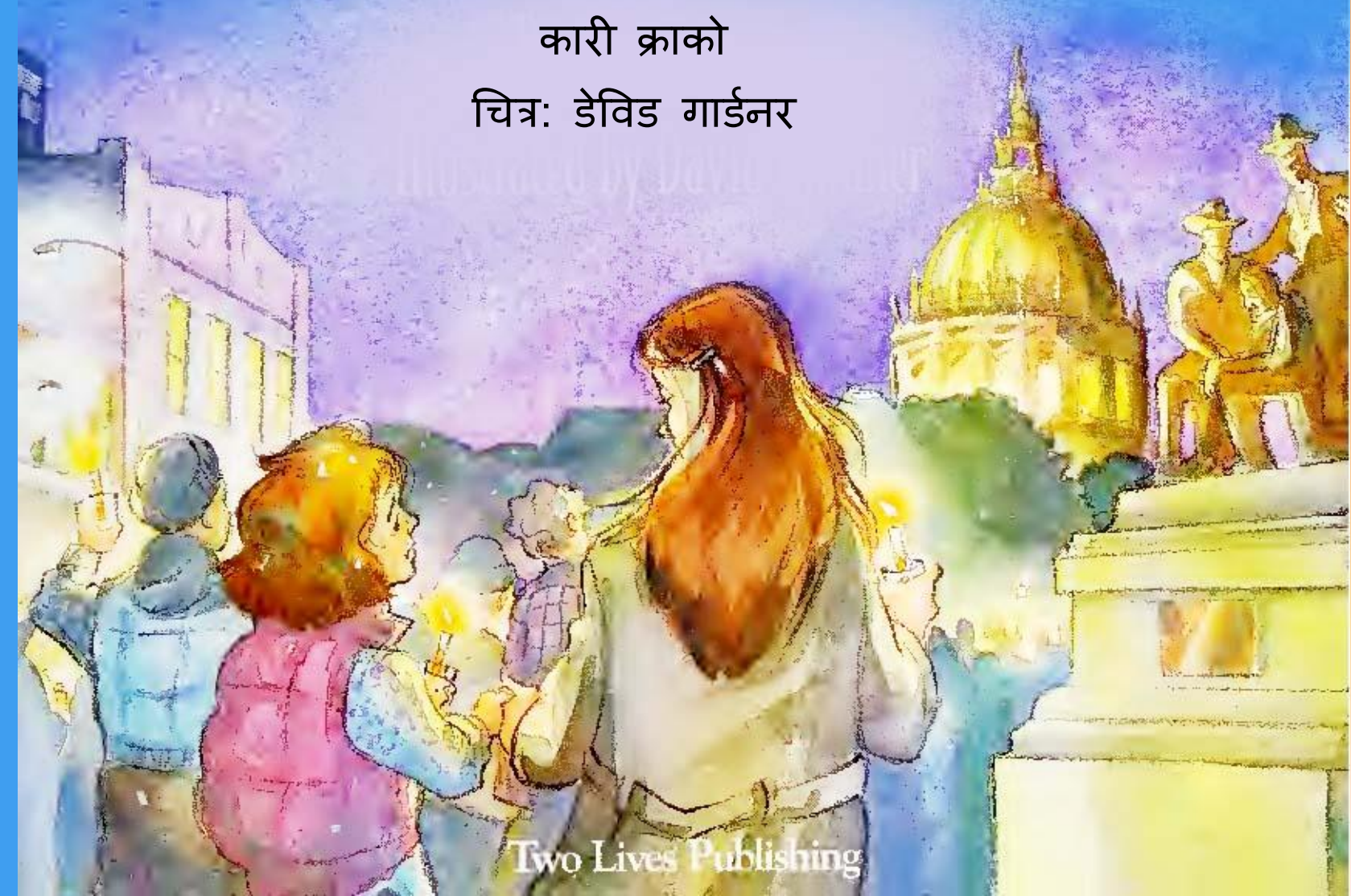
"केवल एक चीज जिसका उन्हें इंतजार करना है और वो है आशा.

और आप उन्हें आशा ज़रूर दे सकते हैं.

एक बेहतर दुनिया की आशा, एक बेहतर कल की आशा...
यह इस बात की उम्मीद है कि सबकुछ ठीक होगा."

- हार्वे मिल्क
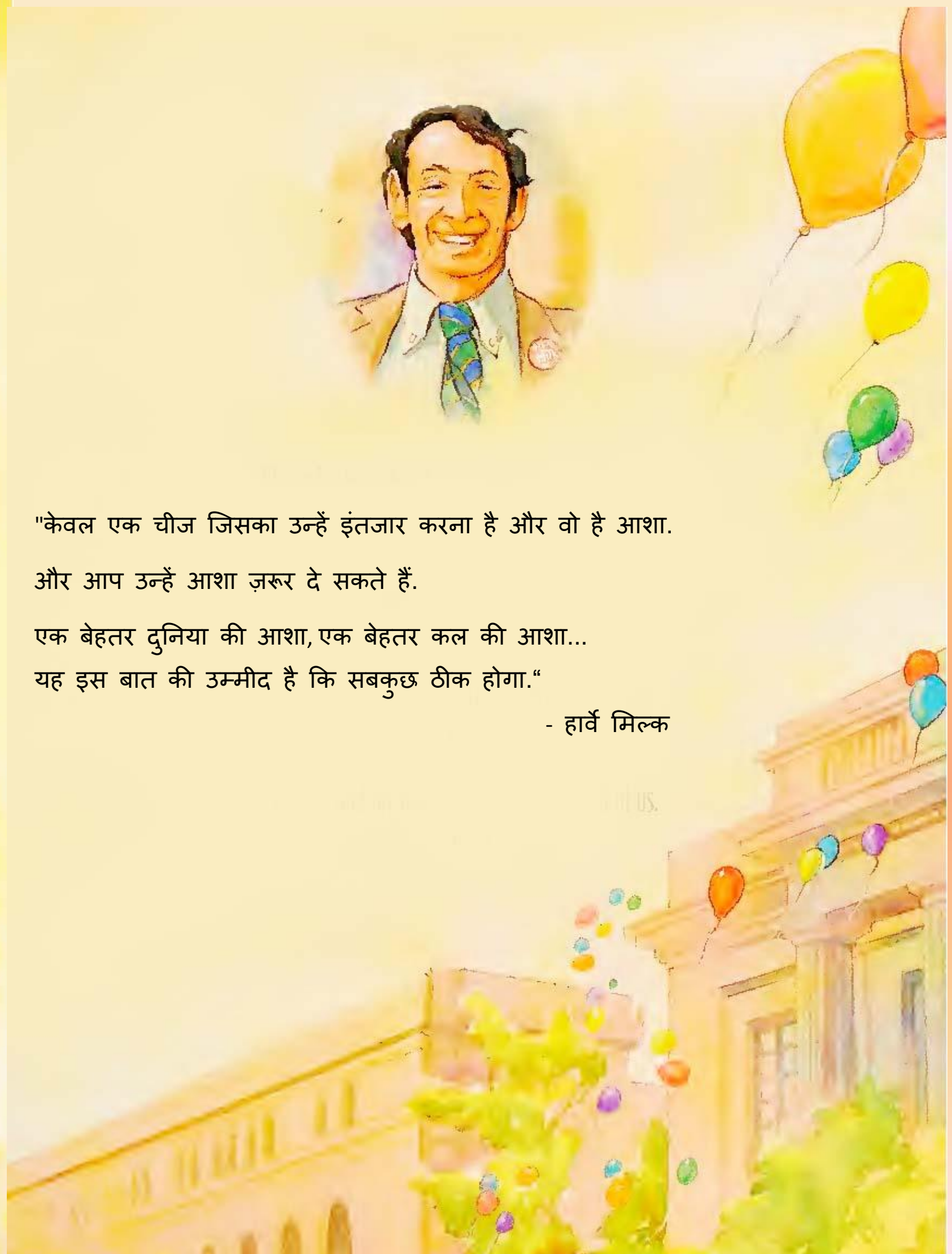
किसी ने कभी सोचा भी नहीं होगा कि बड़े कानों वाला एक छोटा बच्चा एक दिन इतिहास रचेगा. हार्वे बर्नार्ड मिल्क का जन्म 22 मई, 1930 को एक मध्यम-वर्गीय यहूदी परिवार में दूसरे बेटे के रूप में हुआ था. वो वुड-मेयर, न्यूयॉर्क में पले-बढ़े.
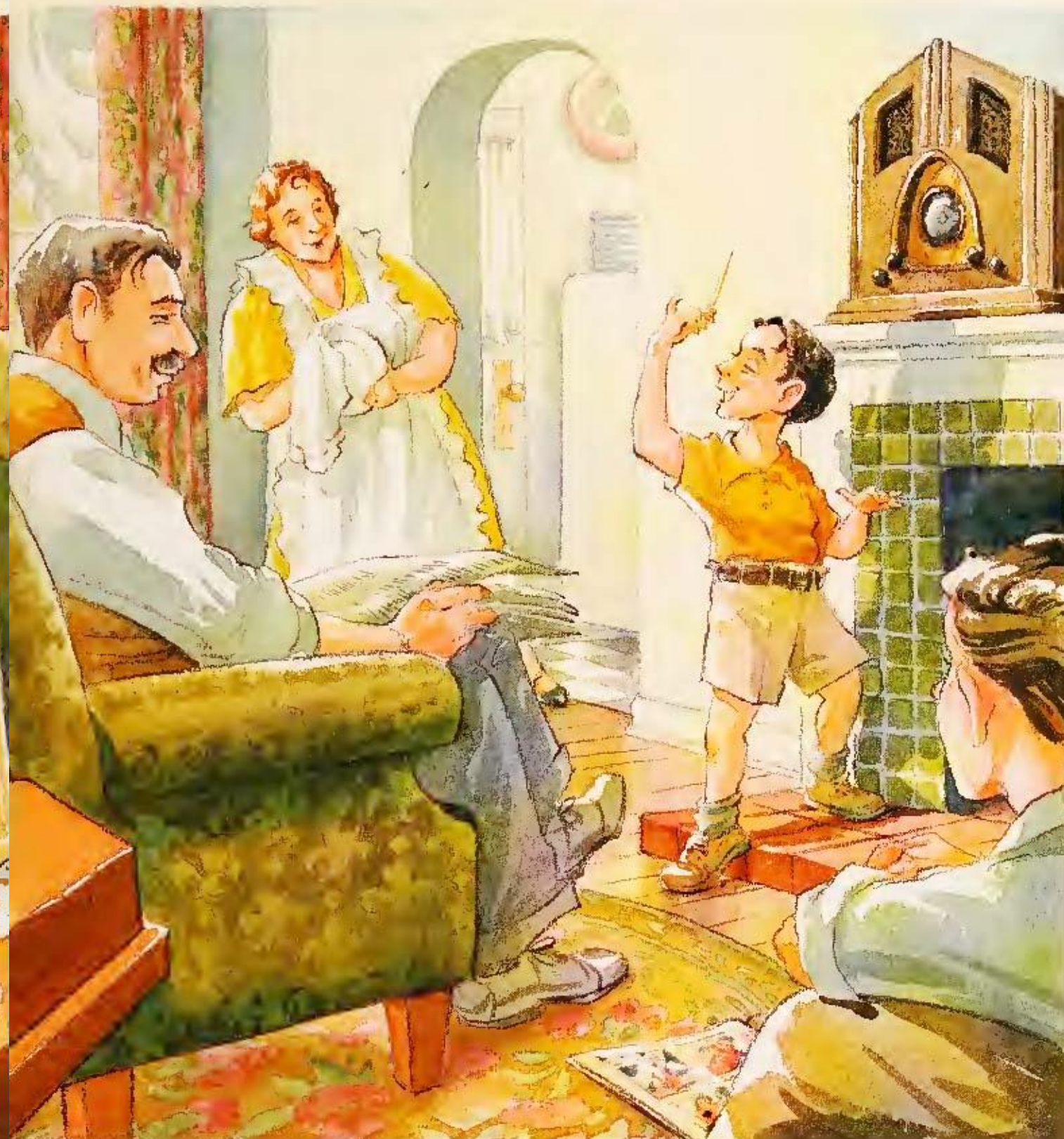
एक बच्चे के रूप में, हार्वे को ध्यान का केंद्र बनना पसंद था. शनिवार की दोपहर को, वो रेडियो से बजने वाले अनदेखे ऑर्केस्ट्रा का संचालन करने का नाटक करके अपने परिवार को खुश करता था.

मिन्नी मिल्क को अपने बुद्धिमान और ऊर्जावान बेटे पर विशेष रूप से गर्व था. उन्होंने अपने बेटे में एक स्वतंत्र भावना को पहचाना और उसे उन मूल्यों के लिए खड़े होने के लिए प्रोत्साहित किया जिसमें वो विश्वास करता था. हार्वे उस दिन को कभी नहीं भूला जब उसकी माँ ने उसे वारसॉ यहूदी बस्ती के बहादुर यहूदियों के बारे में बताया था, जो संख्या में कम होने और नाजियों से घिरे होने के बावजूद भी अपनी रक्षा करते रहे.

हार्वे को खेल पसंद थे. उसके ऊंचे कद ने उसे बास्केटबॉल टीम का स्वाभाविक खिलाड़ी बना दिया और उसने ट्रैक और कुश्ती में भी भाग लिया. उसने 60 नंबर की जर्सी पहनकर बेशोर-हाई स्कूल की फुटबॉल टीम में भी खेला.
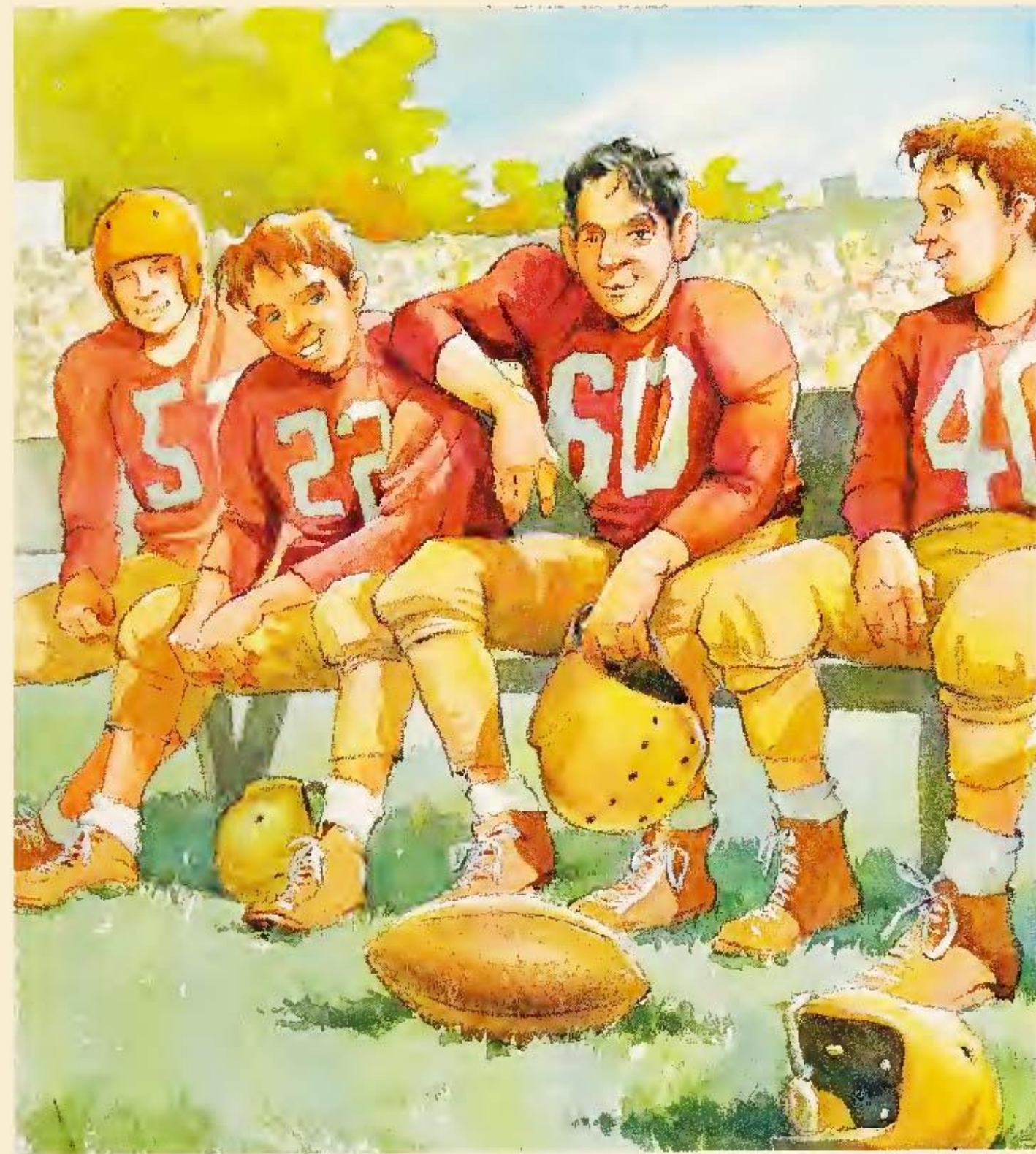
हार्वे हमेशा लोकप्रिय रहा. ऐसे किसी व्यक्ति को ढूंढना मुश्किल था जो उसका मित्र न हो. उसके चेहरे पर हमेशा मजाक और मुस्कुराहट होती थी. लोगों को कैसे हंसाना है वो अच्छी तरह जानता था. उसमें कुछ ऐसा खास था जिसे वर्षों बाद राजनेताओं ने करिश्मा कहा. हर कोई हार्वे को जानता था और उसे पसंद करता था.

उसके दोस्तों और परिवार को यह नहीं पता था कि हार्वे बड़ा होकर समलैंगिक बन रहा था. हार्वे को चौदह साल की उम्र में ही पता चल गया था कि वो समलैंगिक है, लेकिन आने वाले कई वर्षों तक उसने इस बात को गुप्त रखा. अपने समय के बहुत से लोगों की तरह, उसे भी डर था कि अगर दूसरों को पता चला कि वो समलैंगिक है तो उसके साथ बुरा व्यवहार होगा. उसे इस बात का डर था कि उसे स्कूल में पीटा जाएगा और उसके दोस्त और परिवार उसे छोड़ देंगे. उससे उसकी नींद में खलल पड़ी और उसके दिन कष्टमय हुए.
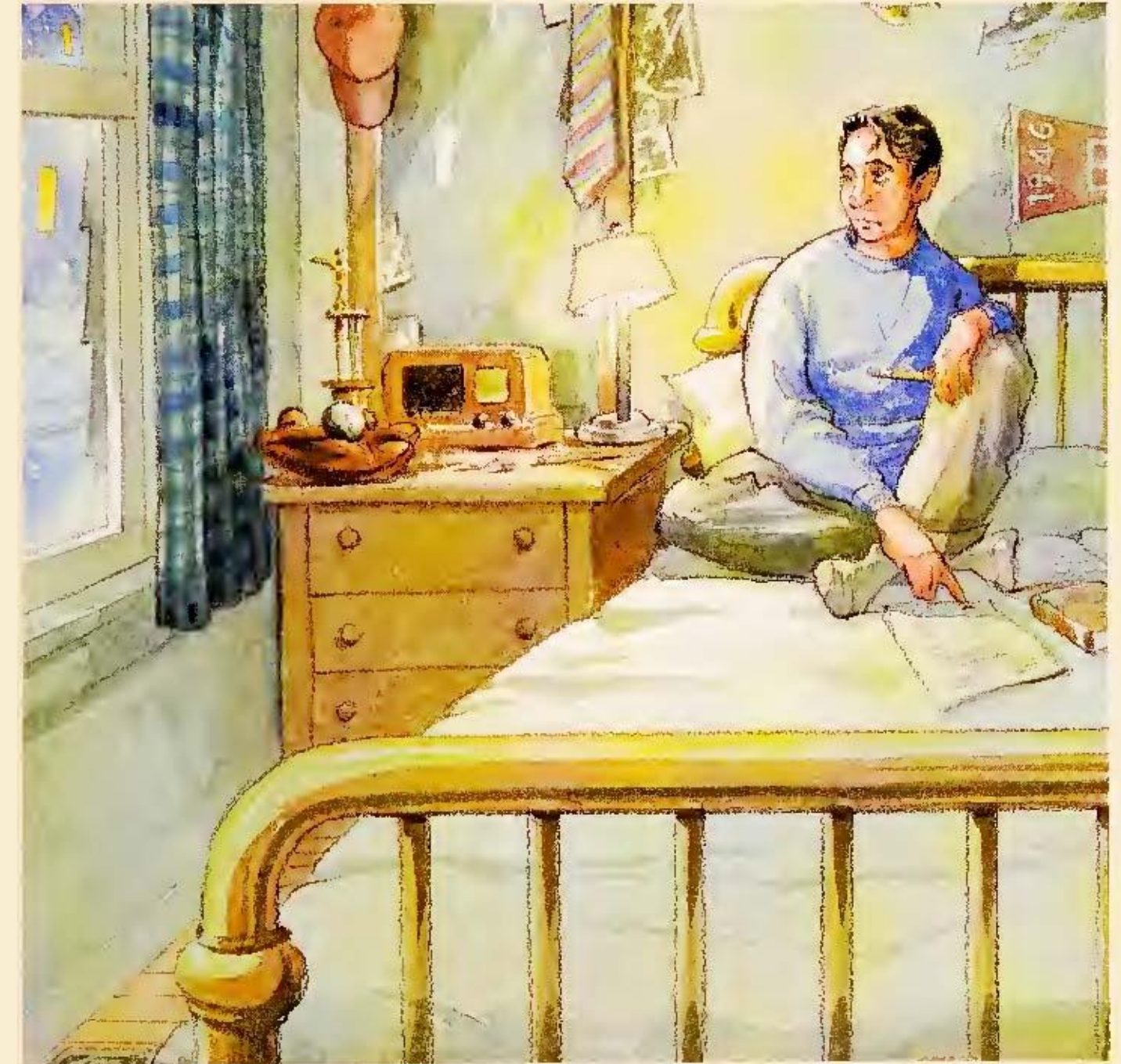
एक अच्छे छात्र की हैसियत से हार्वे ने हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी की और फिर वो अल्बानी स्टेट टीचर्स कॉलेज चले गए. उन्होंने फुटबॉल और बास्केटबॉल खेलना जारी रखा और "द स्लेट कॉलेज" के खेल संपादक बने. जून 1951 में हार्वे को उनका कॉलेज डिप्लोमा मिला जिसे उनके माता-पिता ने बड़े गर्व से देखा.

कॉलेज के बाद हार्वे नौसेना में शामिल हो गए. वो गहरे समुद्र में एक विशेषज्ञ गोताखोर बन गए और उन्होंने दूसरों को समुद्र तल पर भारी उपकरण चलाना सिखाया. अपने पेशे में तेजी से आगे बढ़ते हुए, हार्वे जल्द ही यू.एस.एस. में मुख्य अधिकारी बन गए. किट्टीवेक, एक पनडुब्बी बचाव जहाज था जो प्रशांत महासागर में परिभ्रमण करता था. जब वो अपने भाई रॉबर्ट की शादी में गये, तो वो अपनी नौसेना की वर्दी में इतने सुंदर लग रहे थे कि उनके परिवार और दोस्त सभी आश्चर्यचकित थे कि वो कब घर बसायेंगे और "सही लड़की" से शादी करेंगे.

हार्वे को प्यार हुआ और उन्होंने घर बसाया. लेकिन उन्होंने शादी कैंपबेल नाम का एक सुंदर युवक से की. वे रेगो पार्क, न्यूयॉर्क में एक साथ रहने गए, जहां हार्वे ने हेवलिट हाई स्कूल में गणित और विज्ञान पढ़ाया और स्कूल के बाद बास्केटबॉल की कोचिंग की. वे दोनों एक साथ खुश थे, लेकिन हार्वे ने अपने रिश्ते को गुप्त रखा. हार्वे को डर था कि अगर लोगों को पता चला कि वह समलैंगिक है तो वो अपनी नौकरी, अपने दोस्तों और अपने परिवार को खो देगा. अपने जीवन के इतने बड़े हिस्से को गुप्त रखने ने, हार्वे और कैंपबेल पर काफी तनाव डाला और छह साल बाद वे अलग हो गए.

हार्वे इस तथ्य को छिपाते-छिपाते थक गए कि वो समलैंगिक थे. इसलिए, जब उनकी मुलाकात स्कॉट स्मिथ से हुई और उन्हें प्यार हो गया, तो वे सैन फ्रांसिस्को के एक पड़ोस में चले गए, जिसे कास्त्रो के नाम से जाना जाता था. कास्त्रो एक समलैंगिक पड़ोस बन रहा था, एक ऐसी जगह जहां कोई समलैंगिक जोड़ा सड़क पर सुरक्षित चल सकता था, हाथ पकड़ सकता था और स्नेह, प्रेम खुशी और गर्व के सभी लक्षण दिखा सकता था.
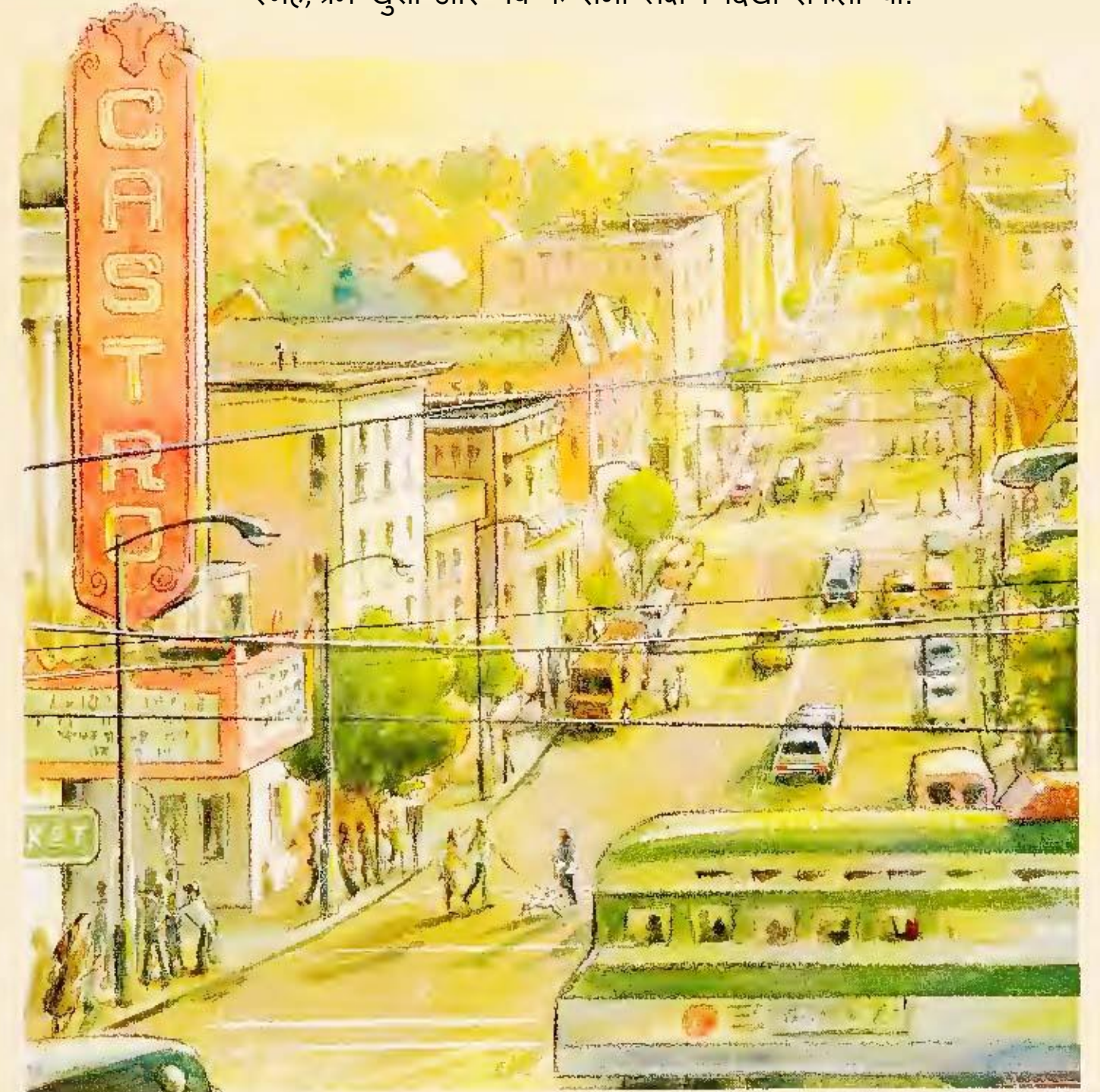
हार्वे और स्कॉट ने अपना पैसा एक-साथ लगाया और कैमरा सप्लाई का काम कास्त्रो स्ट्रीट पर, एक विक्टोरियन स्टोर के लिए पांच साल की लीज में निवेश किया. वे ऊपर रहे और पहली मंजिल पर उन्होंने कास्त्रो कैमरा स्टोर खोला. अपने जीवन में पहली बार, हार्वे को ऐसा महसूस हुआ कि वो अंततः स्वयं अपने जैसे हो सकते थे.

हार्वे ने अपने ग्राहकों से खूब बातें करते थे. वो उनकी मदद करने या सलाह देने के लिए हमेशा तैयार रहते थे. कास्त्रो के नए निवासी यह पूछने आते थे कि वे रहने की जगह कहां ढूंढें या पहली नौकरी कैसे खोजें. स्टोर की बड़ी चित्र खिड़कियों पर पड़ोस की बैठकों की घोषणाएँ, याचिकाएँ और नोटिस प्रदर्शित होते थे. कास्त्रो का कैमरा स्टोर शीघ्र ही एक सामुदायिक केंद्र बन गया.
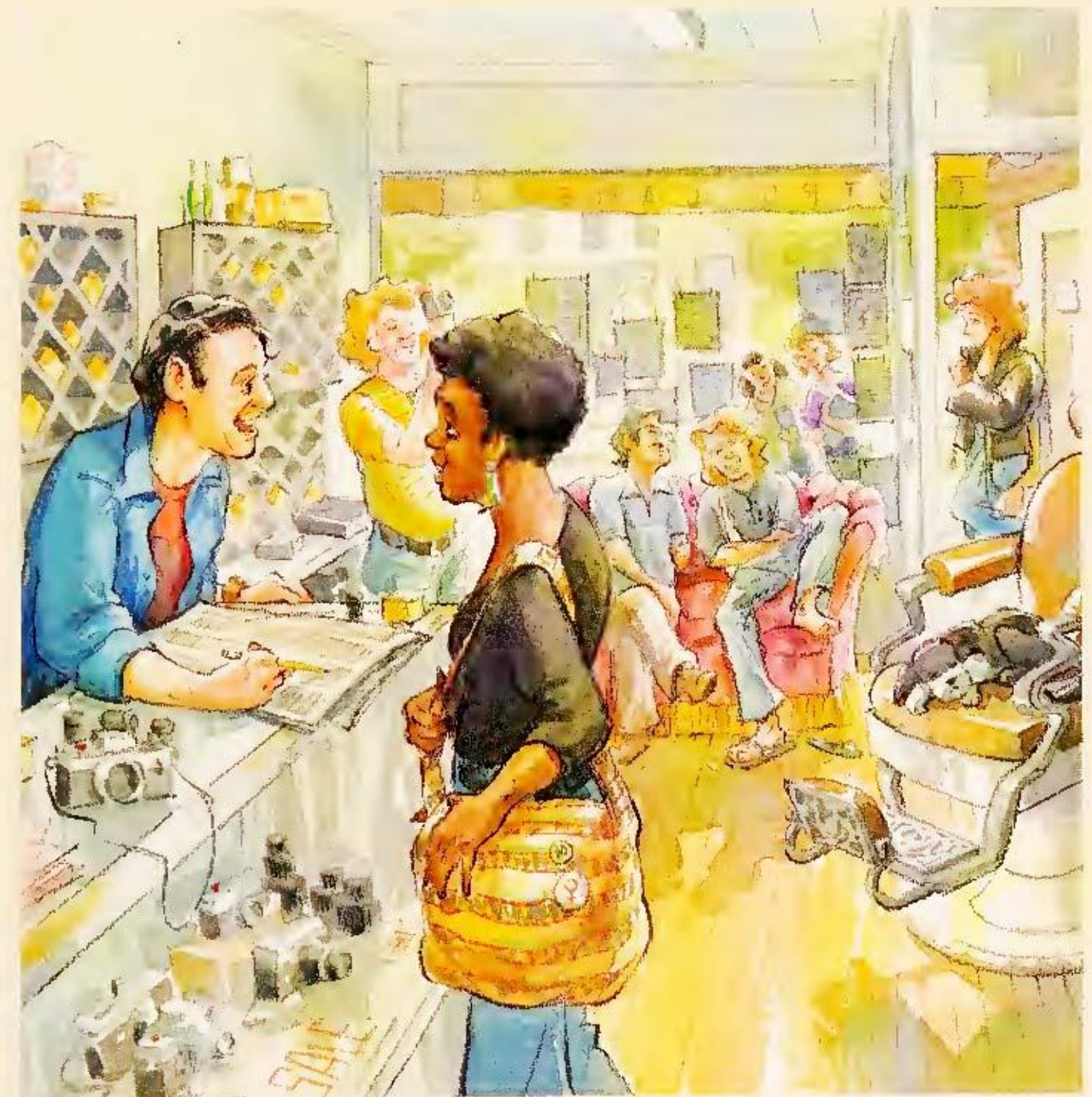
जैसे ही हार्वे ने लोगों की बातें सुनीं, उन्हें एहसास हुआ कि कास्त्रो समुदाय को एक नेता की ज़रूरत थी. समलैंगिक लोगों को कोई कानूनी सुरक्षा नहीं थी, और उन्हें हमेशा अपनी नौकरी और घर खोने का जोखिम बना रहता था. उन्हें पुलिस द्वारा परेशान किया जाता था. कानूनों को बदलने और समलैंगिक लोगों के अधिकारों के लिए लड़ने में मदद करने के लिए, हार्वे ने सैन फ्रांसिस्को में सार्वजनिक पद के लिए चुनाव लड़ने का फैसला किया.

कई लोग हार्वे मिल्क की चुनाव में मदद करना चाहते थे. उन्हें हार्वे मिल्क और उनके विचार पसंद आये. हार्वे ने अपने दोस्तों, पड़ोसियों और ग्राहकों से स्वेच्छा से डाक भेजने, पोस्टर पेंट करने और फोन का जवाब देने के लिए लोगों के समय की मदद ली. ग्यारह वर्षीय मेदोरा पायने हर दिन स्कूल के बाद लिफाफे चिपकाने और हार्वे के लिए पर्चे बांटने आती थी. उसने अपने स्कूल में चंदे का आयोजन किया और $39.28 इकट्ठे किये.
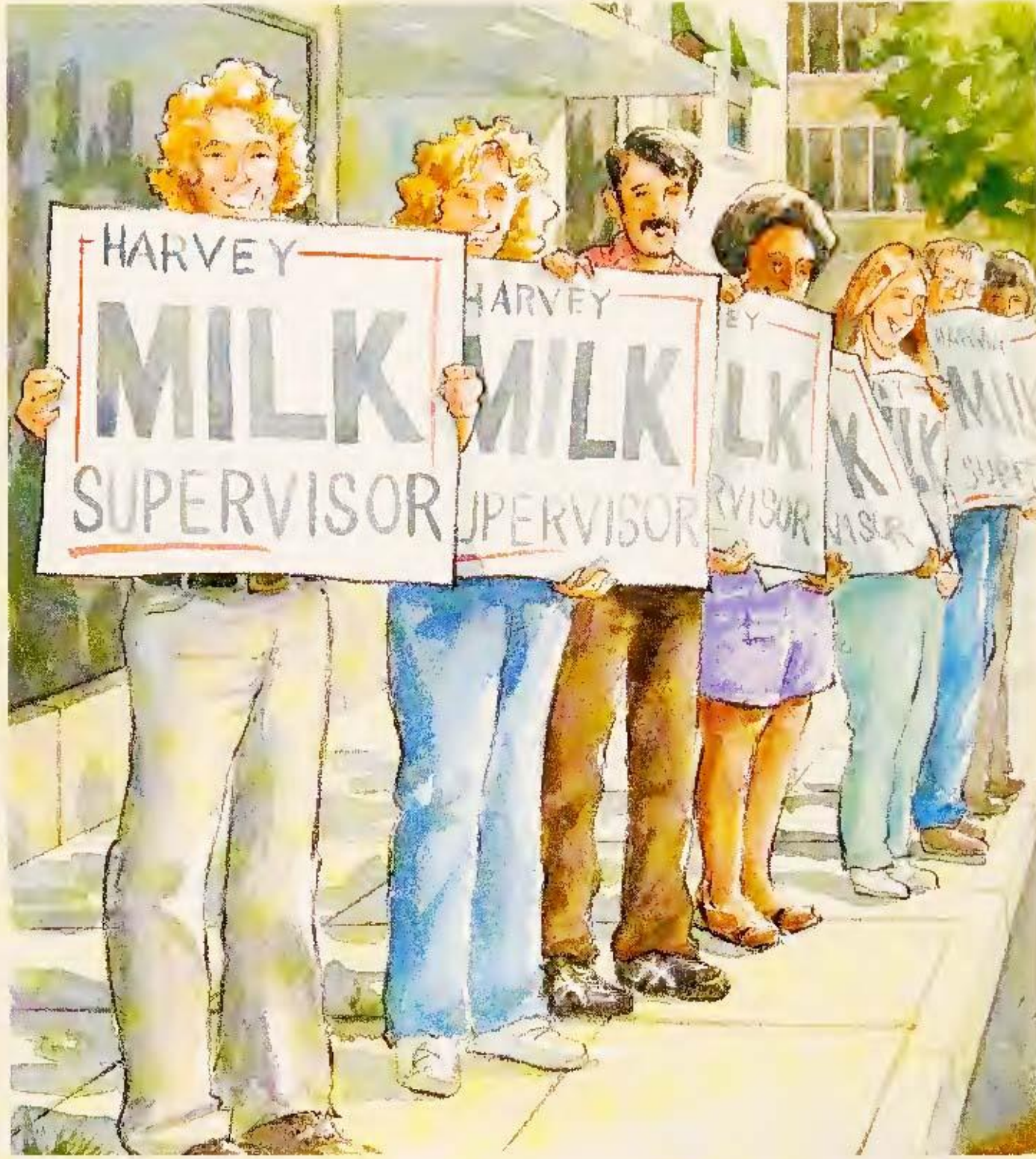
कुछ लोगों को हार्वे मिल्क का अभियान एक मज़ाक लगा. उन्हें खुले तौर पर समलैंगिक उम्मीदवार का निर्वाचित होना असंभव लगा, क्योंकि इससे पहले कभी किसी ने वैसा नहीं किया था. हार्वे ने 1973 और 1976 के बीच, तीन बार सैन फ्रांसिस्को में सार्वजनिक पद के लिए चुनाव लड़ा. हर बार वो हारे.

लेकिन हार्वे ने उम्मीद नहीं खोई और न ही हार मानी. वो जानते थे कि सिटी हॉल में एक खुले तौर पर समलैंगिक नेता के होने से लोगों को इस बात पर गर्व करने का साहस मिलेगा कि वे कौन हैं. वो अपना प्रयास करते रहे और हर बार जब वह पद के लिए चुनाव लड़ते तो वो जीत के और करीब पहुंचते. उन्होंने अपने जिले में बहुत से लोगों से संपर्क बढ़ाने के लिए अथक परिश्रम किया. हार्वे ने अपने समुदाय की विविध संस्कृतियों के प्रति सम्मान दिखाया. उन्होंने उन लोगों के अधिकारों के लिए बात की, जिन्हें अक्सर शहर की सरकार द्वारा नजरअंदाज किया जाता था - अफ्रीकी-अमेरिकी, एशियाई अमेरिकी, वरिष्ठ नागरिक, विकलांग लोग, और समलैंगिक और लेस्बियन.

धीरे-धीरे अधिक से अधिक लोग निष्पक्षता और न्याय के बारे में हार्वे के विचारों से सहमत होने लगे. उन्होंने महसूस किया कि हार्वे जिस चीज़ में विश्वास करते थे वो उसके लिए ज़रूर काम करेंगे और शहर की सरकार में बदलाव लाएंगे. 1977 में, हार्वे ने सैन फ्रांसिस्को के पर्यवेक्षकों के बोर्ड के लिए फिर से चुनाव लड़ा और इस बार उन्हें जीत हासिल हुई. जनवरी में एक बरसात के दिन, सैन फ्रांसिस्को के सिटी हॉल की सीढ़ियों पर, हार्वे मिल्क ने पद की शपथ ली. वो अमेरिका में खुले तौर पर समलैंगिक निर्वाचित पहले शहर अधिकारी थे. हार्वे मिल्क ने एक नया इतिहास रचा था.
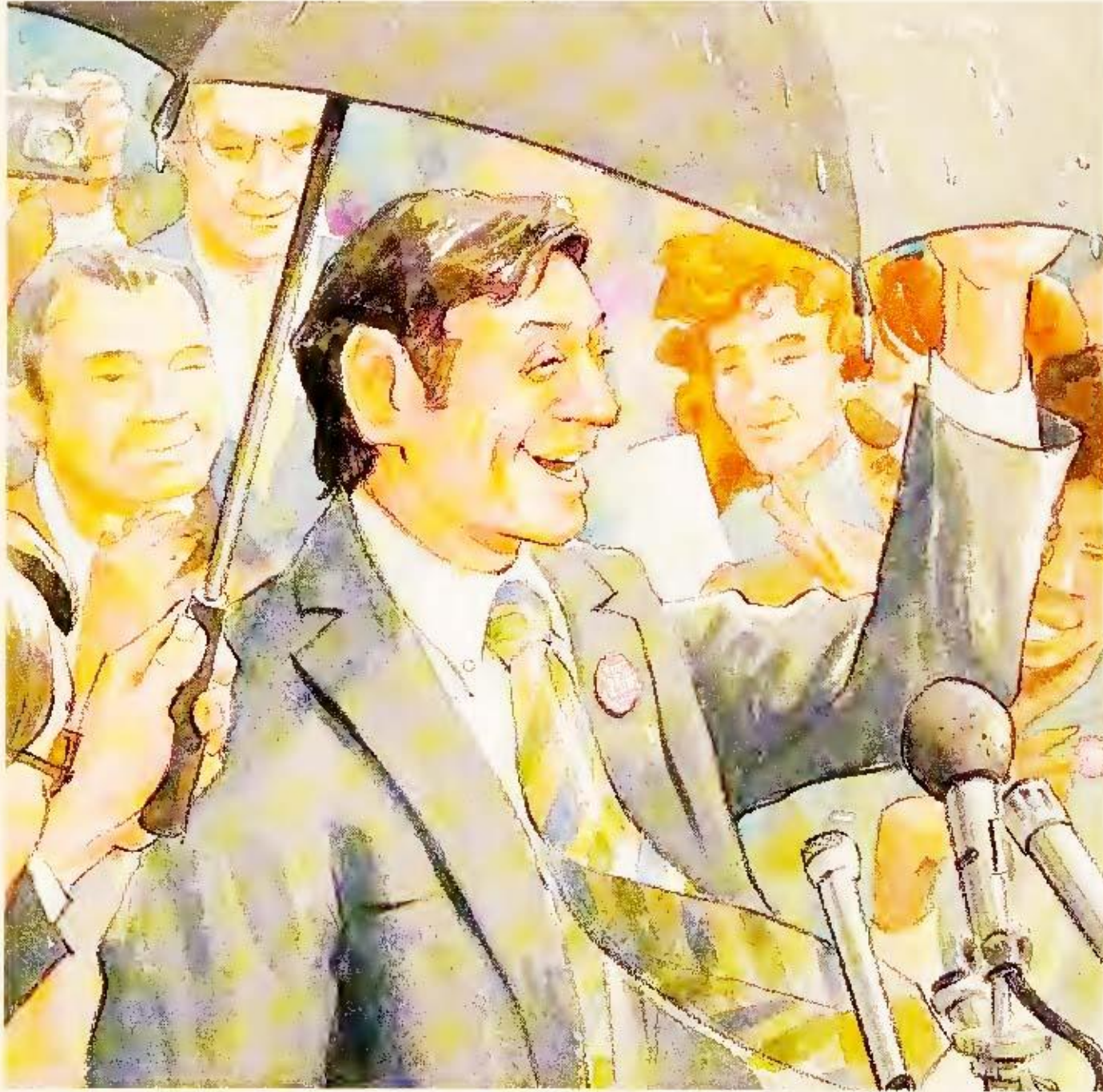
एक पर्यवेक्षक के रूप में, हार्वे मिल्क को उन मुद्दों पर काम करना पड़ा जिनकी सैन फ्रांसिस्को के लोगों को परवाह थी: स्कूल, पार्क, पुलिस सुरक्षा और आवास. उन्होंने सभी लोगों के लिए जीवन की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए कानून बनाने में मदद की. एक पड़ोस के स्कूल को बंद करने के खिलाफ लड़ने के बाद, उन्होंने कहा, "हमें अपने शहरों को इस तरह नहीं छोड़ना चाहिए. हमारे शहर लड़ने लायक हैं, न केवल उनमें रहने वाले लोगों के लिए, बल्कि उद्योग, वाणिज्य, संघों, हर किसी के लिए. हमें क्या चाहिए? हम एक ऐसा पड़ोस बनाएं जहां लोग पैदल चलकर काम पर जा सकें और वे अपने बच्चों का पालन-पोषण कर सकें और अपने जीवन का आनंद ले सकें. यह बहुत आसान है."

सुपरवाइज़र मिल्क ने सैन फ्रांसिस्को में समलैंगिक अधिकार विधेयक पेश करने के लिए कड़ा संघर्ष किया. वो कानून समलैंगिक लोगों को काम पर और घर चुनते समय भेदभाव से बचाता. नगर परिषद के ग्यारह पर्यवेक्षकों में से दस ने समलैंगिक अधिकार विधेयक के लिए मतदान किया, और सैन फ्रांसिस्को के मेयर, जॉर्ज मोस्कोन ने उत्साहपूर्वक विधेयक पर हस्ताक्षर करके उसे एक कानून बना दिया. "मैंने यह काम तुरंत किया है," मेयर ने कहा, "नागरिक अधिकारों के लिए इस एक महत्वपूर्ण कदम पर मैंने त्वरित और स्पष्ट कार्रवाई की है."
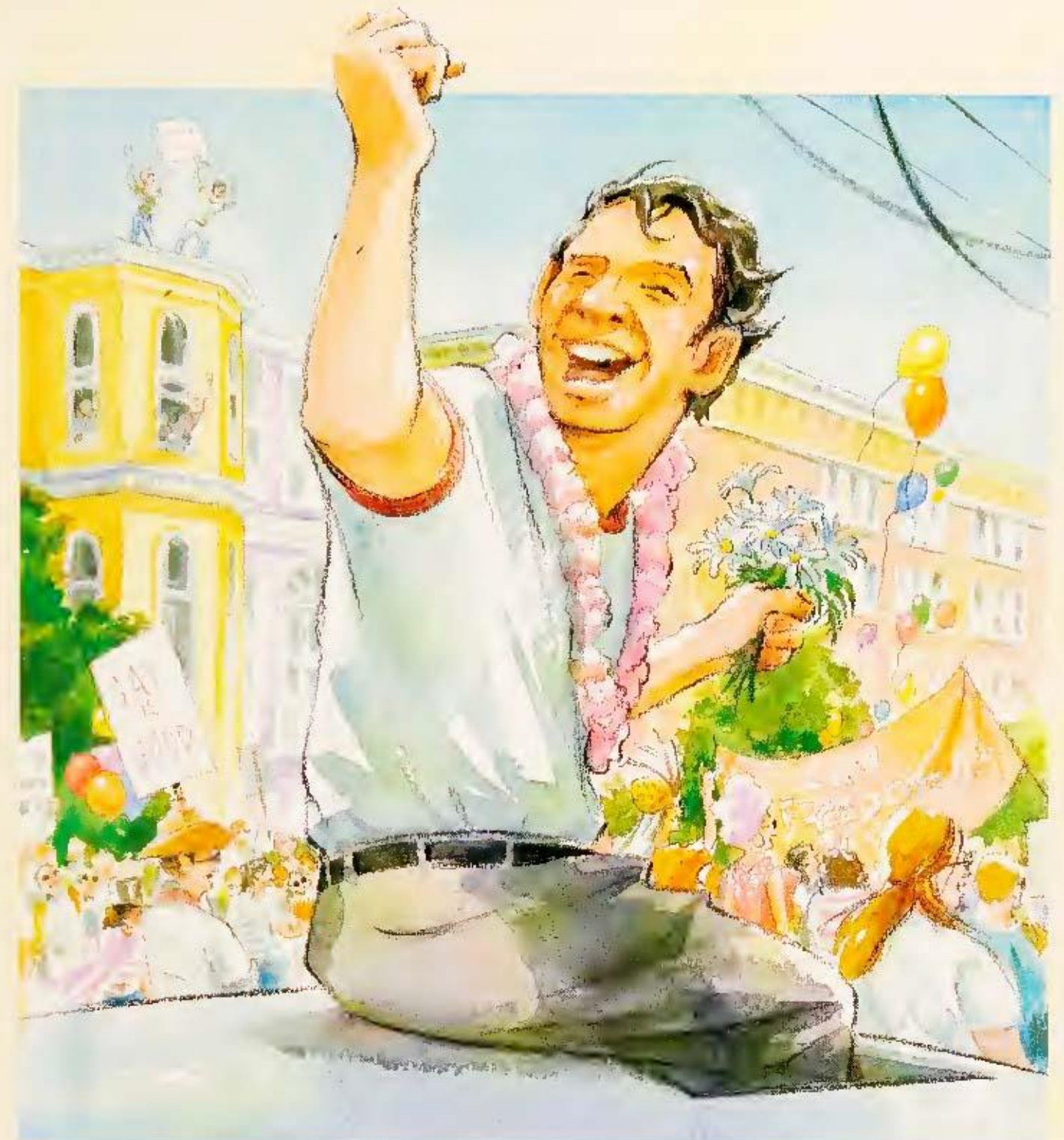
सैन फ्रांसिस्को के समलैंगिक लोगों को अब उनके कार्यस्थल पर उत्पीड़न और अपनी नौकरियाँ और घर खोने से कानूनी रूप से संरक्षित किया गया था. अधिक से अधिक समलैंगिक लोग अब छिपकर बाहर खुले में आने और सुरक्षित रहने में सक्षम हुए. 1978 में समलैंगिक स्वतंत्रता दिवस परेड में, लगभग 400,000 लोगों ने, सैन फ्रांसिस्को शहर के बीच से मार्च किया. हार्वे मिल्क गर्व से परेड के केंद्र में थे और हजारों लोग उनकी जय-जयकार कर रहे थे.

उस दिन हार्वे मिल्क ने सिटी हॉल के सामने मौजूद विशाल जनसमूह के सामने भाषण दिया. उन्होंने राष्ट्र को यह दिखाने के लिए वाशिंगटन, डी.सी. में समलैंगिक अधिकार मार्च का आह्वान किया जिससे अब समलैंगिक लोग छिपे नहीं रहें. हार्वे मिल्क एक हीरो बन गए थे.

लेकिन कुछ लोगों को बढ़ते समलैंगिक आंदोलन से खतरा महसूस हुआ. वे इस विचार से नफरत करते थे और डरते थे कि समलैंगिक लोगों को भी बाकी सभी लोगों के समान अधिकार प्राप्त हों. डैन व्हाइट उन लोगों में से एक थे. वो समलैंगिक अधिकार विधेयक के खिलाफ मतदान करने वाले एकमात्र पर्यवेक्षक थे. उन्होंने सैन फ्रांसिस्को समलैंगिक स्वतंत्रता परेड को होने से रोकने की भी कोशिश की. लेकिन उनके एक वोट से कोई फर्क नहीं पड़ा.

डैन व्हाइट को हारना पसंद नहीं था. वो अपनी शक्ति की कमी से इतना निराश हुआ और उसे हार्वे मिल्क की बढ़ती लोकप्रियता से इतना ईर्ष्या हुई कि उसने पर्यवेक्षकों के बोर्ड से इस्तीफा दे दिया. दस दिन बाद, उसने अपना मन बदला और फिर से नियुक्त होने के लिए कहा. जब मेयर मोस्कोन ने उसे उसकी नौकरी वापस नहीं दी तो उसे बहुत गुस्सा आया.
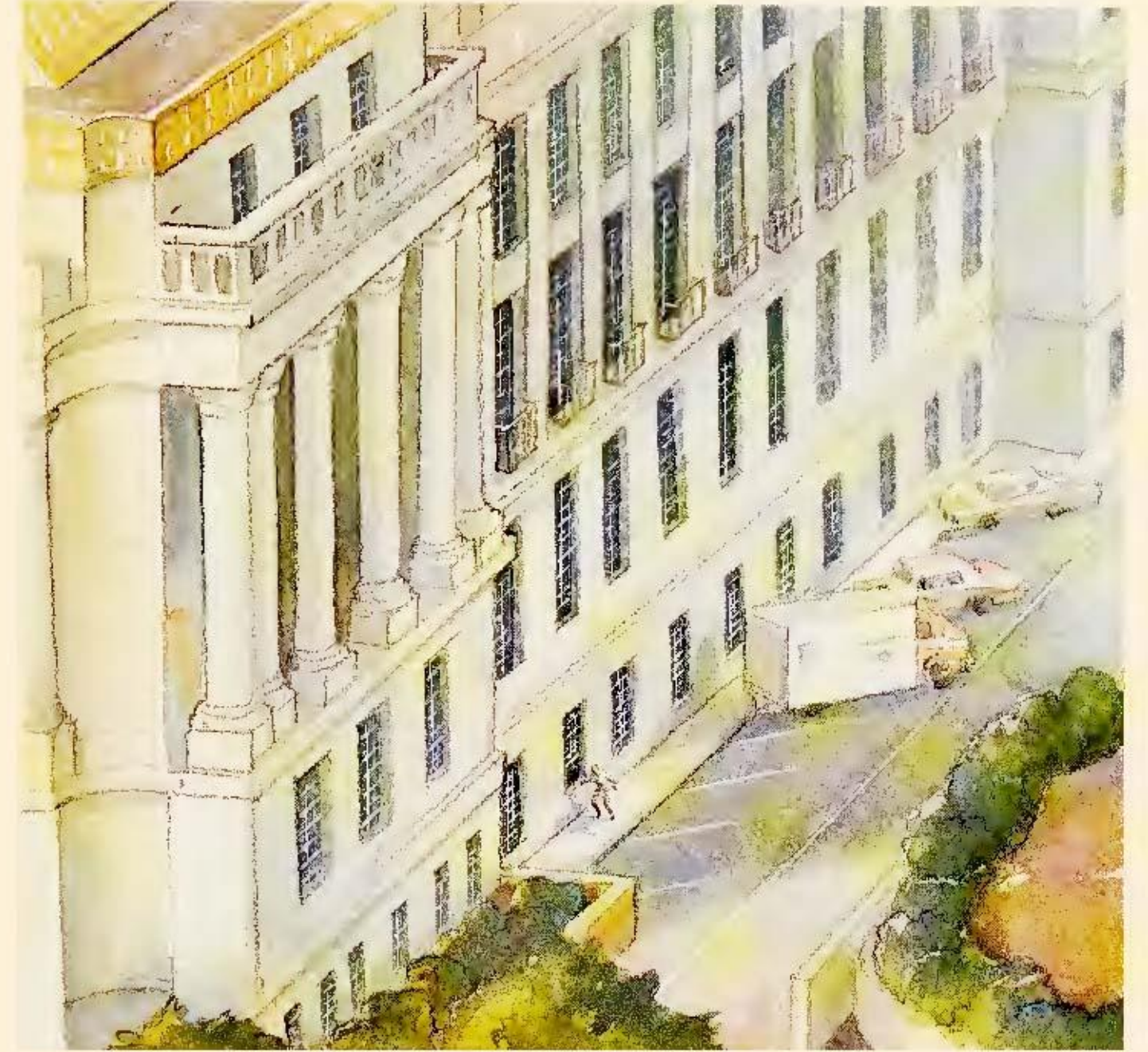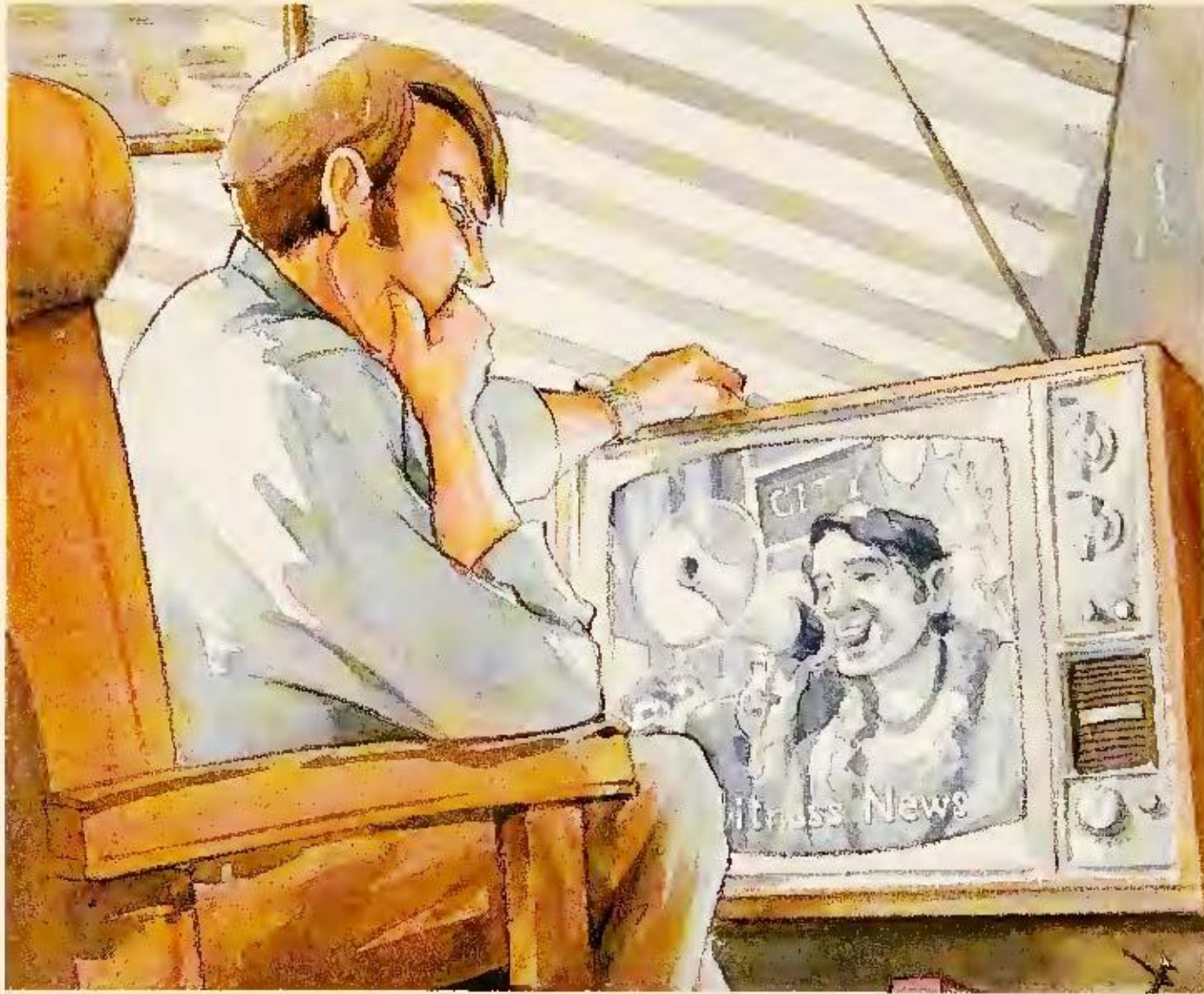
नवंबर की एक धूसर सुबह में, डैन व्हाइट एक भरी हुई बंदूक के साथ सिटी हॉल के पीछे एक तहखाने की खिड़की से रेंगते हुआ अंदर आया.

डैन व्हाइन मेयर के कार्यालय में दाखिल हुआ और फिर कुछ बहस के बाद उसने मेयर जॉर्ज मोस्कोन को गोली मार दी. अपनी बंदूक को पुनः लोड करके वो तेजी से हॉल से नीचे हार्वे मिल्क के कार्यालय की ओर गया. वहां उसने पाँच गोलियाँ चालायीं.

मेयर मोस्कोन और हार्वे मिल्क दोनों मारे गए.
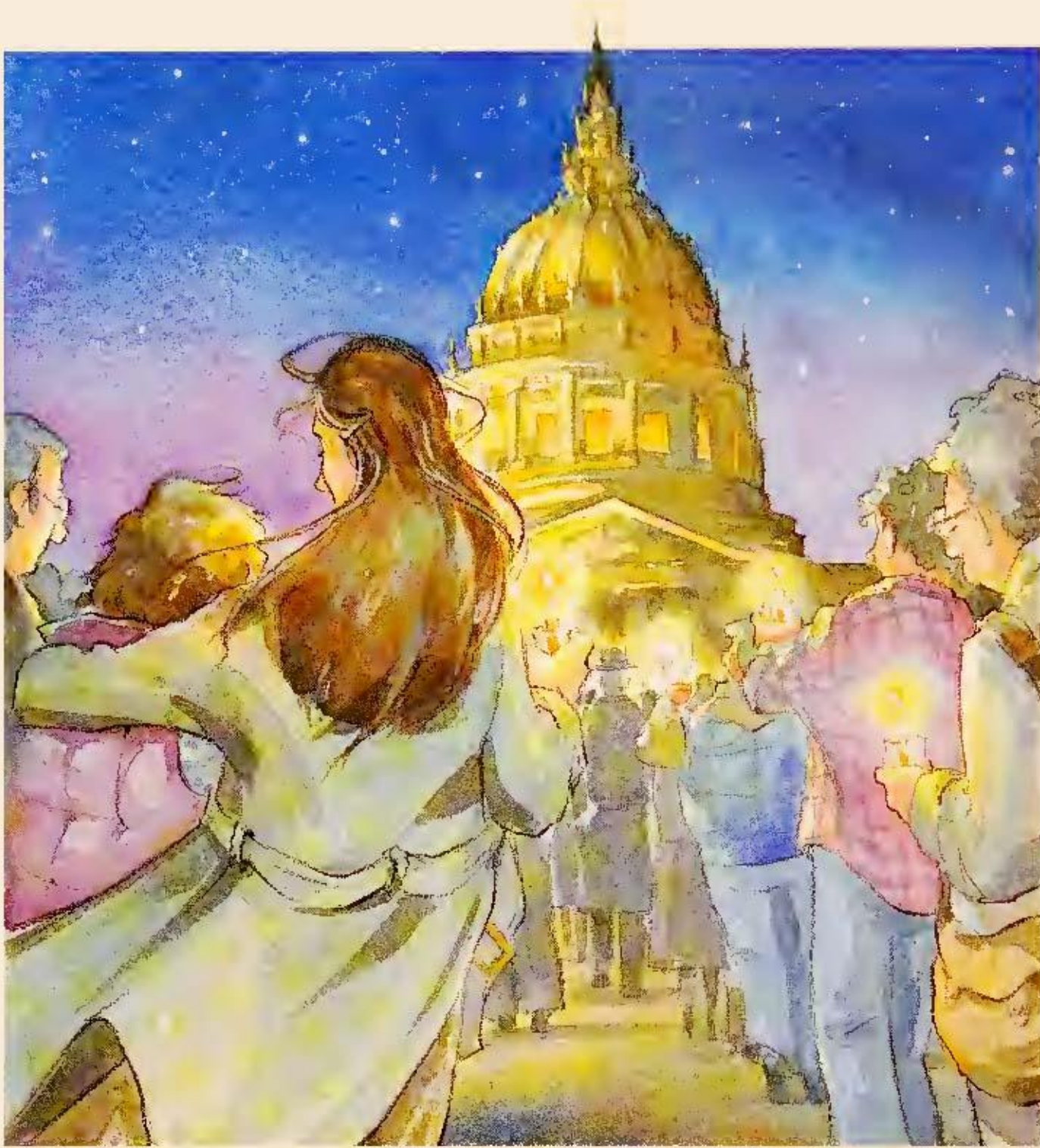
दोहरे हत्याकांड की खबर से हर तरफ लोग स्तब्ध रह गये. इन दो महान नेताओं के निधन पर शोक मनाने के लिए उन्होंने अपने घर, कार्य स्थल और स्कूल छोड़ दिए. सिटी हॉल के सामने भीड़ लगने लगी. रात होते-होते कास्त्रो से सिटी हॉल तक जाने वाली एक मील लंबी सड़क हजारों लोगों से खचाखच भर गई. वे मोमबत्तियाँ लेकर मौन खड़े थे. उस रात सैन फ्रांसिस्को के लोग रोये.

हार्वे मिल्क मारे गए लेकिन उसका सपना जीवित रहा. अगले अक्टूबर 1979 में एक लाख से अधिक लोगों ने उनके आवाहन का उत्तर दिया. उन्होंने वाशिंगटन, डी.सी. में पहले समलैंगिक अधिकार मार्च में भाग लिया और हजारों लोगों ने मारे गए नेता की याद में चित्र बनाए. हार्वे मिल्क को भुलाया नहीं जा सकेगा.
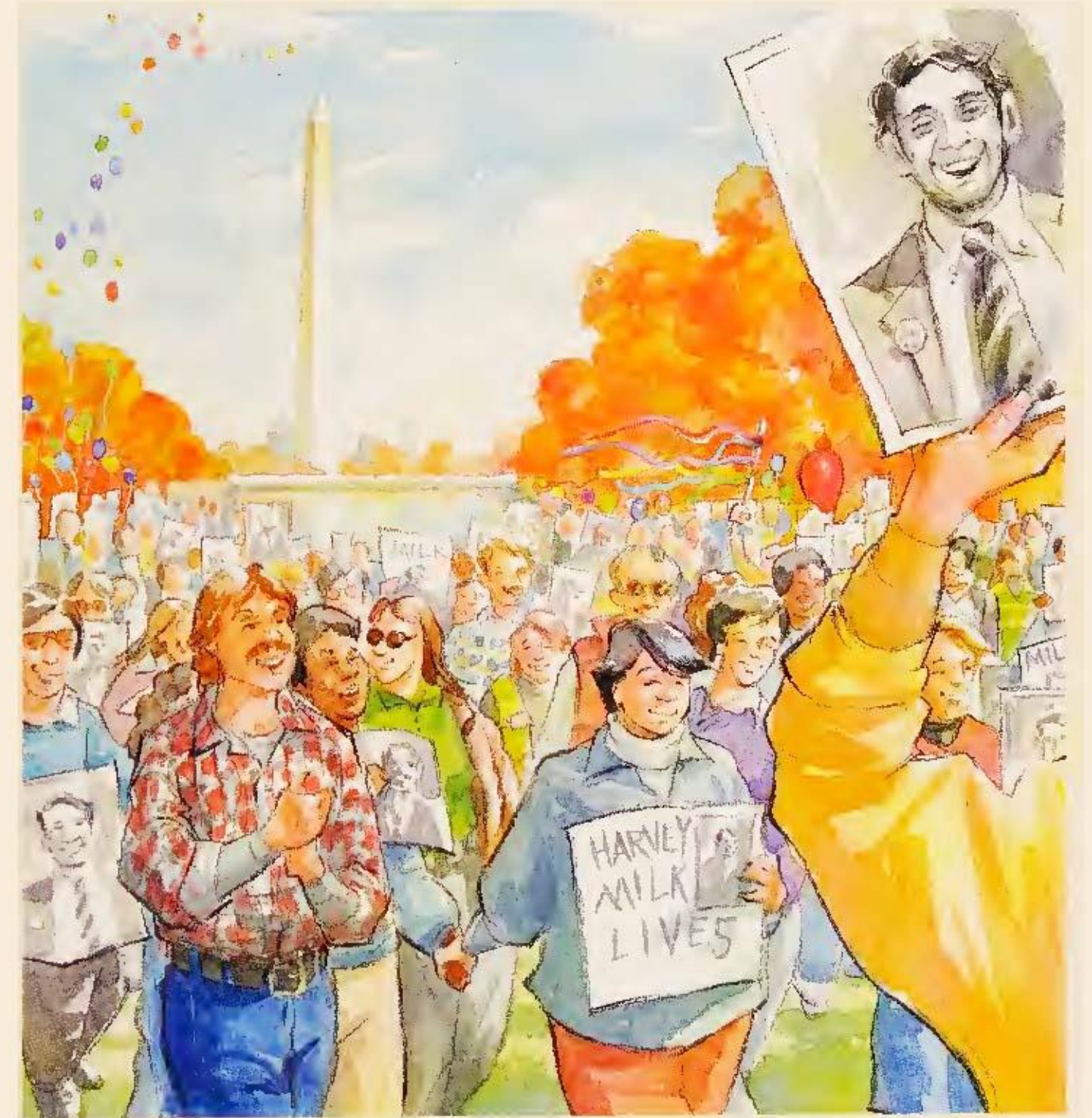
अंत के शब्द

हार्वे मिल्क्स की स्मृति कई स्थानों पर और कई तरीकों से आज भी जीवित है. सैन फ्रांसिस्को में हार्वे मिल्क मेमोरियल प्लाजा, कास्त्रो के प्रवेश द्वार को चिह्नित करता है, और पड़ोस का प्राथमिक विद्यालय जिसे हार्वे ने खुला रखने के लिए संघर्ष किया, उसका नाम अब रखा गया है - *द हार्वे मिल्क सिविल राइट्स अकादमी.*

हार्वे मिल्क का मानना था कि एक व्यक्ति दूसरों के जीवन में बदलाव ला सकता है. उनकी विरासत लोगों को न्याय के लिए संघर्ष करते समय प्रेरित और आशा देती रहती है. आज ऐसे शहरों और राज्यों की संख्या लगातार बढ़ रही है जिन्होंने समलैंगिक लोगों के लिए नागरिक अधिकार संरक्षण अधिनियम बनाया है. अधिकाधिक खुले तौर पर समलैंगिक लोग सार्वजानिक पदों के लिए चुनाव लड़ रहे हैं और निर्वाचित हो रहे हैं. हार्वे मिल्क ने एक बार कहा था: "राजनीति का असली काम सिर्फ कानून पारित करना नहीं है, बल्कि लोगों को आशा देना है." हार्वे मिल्क ने स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया. उन्होंने दुनिया को दिखाया कि सभी लोग अपनी आशाओं को साकार कर सकते थे.